होता रहता है। इसी प्रकार भावना भी नष्ट नही होती है। भावना ही मानव समाज में सत्य असत्य की अनुभूति करती है। व्यक्ति जिस तरह की भावना छोड़ता है प्रकृति में आस– पास उसी तरह की भावना रखने वाले व्यक्ति इस भवना को अपने अंदर स्वाभाविक रूप से ग्रहण करते हैं।

यदि आप किसी के प्रति गलत विचार नहीं लाते हैं तो आपके अंदर गलत भावना नही बनेगी। व्यक्ति सोचता है हम जो कार्य शरीर से करते हैं वही होता है, पर वह जो सोचता है, जो उसकी भावना से निकलता है वह भी होता है। किसी के प्रति गलत भावना बनाने से उसकी अपनी शक्ति क्षीण होती है। जिसके प्रति गलत भावना बनी उसकी नहीं, वह और मजबूत होता है क्योंकि विरोधी तत्व कमजोर पर ही आक्रमण करते हैं। इसलिए हर व्यक्ति को अपनी कमजोरी दूर करनी चाहिए। व्यक्ति की जैसी भावना बनती है वैसा तत्व उसके शरीर में स्वाभाविक गति से प्रवेश करने लगता है। इसलिए मानव समाज को अपने अंदर से सिर्फ शुद्ध भावना ही छोड़नी चाहिए। जब प्रकृति में अत्यधिक शुद्ध भावना छोड़ दी जाएगी तो प्रकृति के अन्य जीव– प्राणी में एक स्वाभाविक बदलाव आएगा क्योंकि प्रकृति के अन्य जीव– प्राणी को भावना समाज द्वारा मिलती है और फिर यही मानव समाज की भावना के निर्माण में सहायक होते हैं। यदि आप एक समूह में बैठे हैं तो और वहां पर आप सभी लोग एक ही तरह की भावना छोड़ें तो देखेंगे वहां का वातावरण उसी तरह का बदलता नजर आएगा। यदि वहां सत्य छोड़ रहें हैं तो वहां सत्य बढ़ेगा और असत्य छोड़ रहें हैं तो वहां का माहौल वैसा ही बनेगा। प्रकृति में मौसम परिवर्तन में भावना का पूर्ण सहयोग होता है। यदि भावना शुद्ध निकाली जाएगी तो प्रकृति परिवर्तन में घटने वाली दुर्घटनाएं नहीं घटेंगी। शुद्ध भावना से व्यक्ति हर मौसम में आनंदित होगा। यह प्रकृति अपने आप में सत्य दिखाई पड़ेगी। कहीं अन्यत्र खोजने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि व्यक्ति अपनी भावना शुद्ध करता है तो सर्वप्रथम वह स्वयं अमृत पान करता है। मानव समाज का आनंद ही प्रकृति का आनंद है, इसकी शुरुआत मानव समाज को ही करनी पड़ेगी। प्रकृति इसका परिणाम स्वाभाविक रूप से देगी। उसे रोकना किसी के वश में नही है इसलिए मानव समाज को भावना रूपी विज्ञान को समझना चाहिए और इसका पालन करना चाहिए।

प्रदूषण शब्द आते ही एक खतरा सामने दिखाई पड़ने लगता है, किसी तरह का प्रदूषण हो वह सबसे अधिक हानि मानव समाज की करता है। प्रदूषण कई प्रकार के हैं पर इसमें मानव समाज के लिए सबसे अधिक खतरनाक सामाजिक प्रदूषण हैं, जो गंदी भावना से निकलता है। आज का वातावरण गंदी भावना से पूरी तरह प्रदूषित होता जा रहा है।

कुछ लोग अपने दुख से कम दुखी होते हैं पर दूसरों के सुख से ज्यादा दुखी होते है।

इसी प्रकार कुछ लोग समाज के अंदर तरह– तरह की गंदी भावना छोड़ते हैं जिससे वैसी ही वातावरण उस क्षेत्र का बनने लगता है। वातावरण में ऐसी भावना की अधिकता के कारण लोगों में गंदी भावना बनने लगती है और इसका सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है क्योंकि बच्चों की उम्र सीखने की होती है। इस सामाजिक प्रदूषण से मानव समाज शुद्ध भावना छोड़कर बच सकता है। जिसके परिणामस्वरूप अच्छे वातावरण का विकास होगा।

—महात्मा अशोक मानव